वैशाली चतुर्वेदी

जन्म तिथि- 14.07.1970
जन्म स्थान - इन्दौर (म. प्र.)
पिता का नाम- डाक्टर कैलाश चतुर्वेदी
माता का नाम- श्रीमती मांडवी चतुर्वेदी
मोबाइल -9977887837

कितना सुंदर लग रहा, अम्बर का यह रूप।
खग दल विचरण कर रहे,संग सुनहरी धूप।।
संग सुनहरी धूप, भोर की शोभा न्यारी।
मन पुलकित है आज, देखकर छवि यह प्यारी।
दो नयनों में दृश्य, समा जाये यह इतना।
अम्बर रूप स्वरूप, दिखे उल्लासित कितना।।

****

सर्कस जैसी जिंदगी, भिन्न भिन्न हैं पात्र।
सब ही अपनी भूमिका, निभा रहे हैं मात्र।।
निभा रहे हैं मात्र, खेल ये देखो भाई।
दो रोटी की आस, खींच इनको ले आयी।
हँसा रहा जो खूब, लगे वो जोकर बेबस।
जुदा नही ये पात्र, जिंदगी भी है सर्कस।।

****

आता है हर साल ही, रंगों का त्यौहार।
साथ लिये संदेश ये, प्रेम चुनो इस बार।
प्रेम चुनो इस बार, भुला कर नफरत सारी।
हाथ अबीर गुलाल, रंग की हो पिचकारी।
नव उमंग उत्साह, हर्ष ये घर घर लाता।
मधुर मधुर पकवान, लिये ये उत्सव आता।

****

निखरी निखरी धूप का अब आया है दौर।
अमराई पर सज गये, सुंदर सुंदर बौर।
सुंदर सुंदर बौर, हवा चलती इठलाती।
नवऋतु का संदेश , लिए बागों से आती।
छटा यही हर ओर, दिशाओं में है बिखरी।
लगी झूमने शाख, बौर से सजकर निखरी।।

****

जलते हैं हर शाम को, दीपक सबके द्वार।
दिवस कुशल से बीतता, ये उसका आभार।।
ये उसका आभार, यही मन सबका कहता।
उठे दुआ में हाथ, नीर आंखों से बहता।
लौटे पंक्षी नीड़ ,दिवस के ढलते ढलते।
हुयी सुगंधित शाम, धूप दीपक जब जलते।।

****

जीवन नदिया बह रही, सुंदर इसका रूप।
घाट घाट पर मिल रही, कभी छांव या धूप
कभी छांव या धूप, समय जो भी ले आता
राही तो हर हाल, सदा चलता ही जाता
सुख दुख का भंडार, मनुज का कोमल सा मन
बहता नदी समान, निरंतर ही ये जीवन।।

****

झरते पीले पात जब,आते हैं नवपात।
नियम यही संसार का, दर्शाते दिन रात।।
दर्शाते दिन रात,चांद भी बढ़ता घटता ।
कब ढक पाया सूर्य,कुहासा गहरा होता।
करके नव श्रंगार,,वृक्ष पत्तों से भरते।
नही मनाते शोक,पात पीले जब झरते।।

****

खिलता फूल गुलाब का,और साथ में शूल।
जीवन का ये सार है,समझो इसका मूल।।
समझो इसका मूल,चुभन सहनी ही होगी।
ऐसा कौन मनुष्य,न बाधा जिसने भोगी।
उत्तम वही स्वभाव,एक सुख दुख में मिलता।
देखो पुष्प गुलाब,,रहे हरदम ही खिलता।।

****

डरकर जो थमते नही, कहलाते हैं वीर।
रच देते हैं भाल पर ,खुद अपनी तकदीर।।
खुद अपनी तकदीर, नयी तस्वीर बनाते
करें शौर्य के काम ,नही गुण अपने गाते
खुद को कर कुर्बान,अमर हो जाते मरकर।
रच देते इतिहास,न थमते हैं जो डरकर।।

****

जैसे जैसे चढ़ रहे , जीवन के सोपान।
हर अनुभव पर मिल रहा,,एक अनूठा ज्ञान।।
एक अनूठा ज्ञान, कोश नित बढ़ता जाता
जो समझा ये बात, नही गुण अपने गाता
यूंही नहीं सफेद,बाल भी होते ऐसे
अनुभव बढ़ते साथ, उमर भी बढ़ती जैसे।

****